भूमिका

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । सामाजिक समस्याओं, विचारों तथा भावनाओं का सृष्टा है । और उनसे वह प्रभावित होता है । साहित्यकार के व्यक्तित्व का निर्माण, उसकी अनुभूति और कल्पना एक सामाजिक देन है । समाज में ही मनुष्य की भावाभिव्यक्ति विकसित होकर साहित्य का आधार बनती है । समाज से बाहर मनुष्य और पशु में कोई अंतर नहीं होता है । समाज और साहित्य का संबंध अनादि काल से चला आ रहा है । साहित्य हमारे सामने जीवन को उपस्थित करके सुधारता है । हमें एक आदर्श पर चलना सीखाता है । साहित्य मनोविनोद के द्वारा मनुष्य के जीवन का बोझ हलका करता है । जहाँ साहित्य का अभाव है वहाँ का समाज जीवन सुखमय नहीं बन पाता । प्रत्येक राष्ट्र अपने साहित्य को अमूल्य संपत्ति समझते हैं और उन पर गर्व लेते है । जैसा हमारा साहित्य होता है वैसी हमारी मनोवृत्तियाँ रहती है । साहित्य सिर्फ समाज का प्रतिबिंब ही नहीं समाज का नियमन करनेवाला तत्व तथा सच्चा सुधारक है ।

हिन्दी कथा साहित्य अपने उन्मेषकाल से ही सामाजिक सरोकार से जुडा रहा है । वस्तुत: साहित्यकार समाज का मस्तिष्क है । कवि की पुकार समाज की पुकार है । वह अपने समाज को अपने शक्तिशाली विचारों से जागृत करता है और समाज में सुख–शांति भर देता है । तुलसीदास ने भी अपने समय की सामाजिक स्थितियों से प्रभावित होकर राम–परिवार और राम राज्य का हिन्दु समाज के सन्मुख आदर्श रुप में उपस्थित किया है । इसी तरह भीष्म साहनी यथार्थवादी परंपरा के लेखक उन्हीं कथाकारों में से है जिन्होंने मानवीय व्यक्तित्व की संपूर्णता के लिए निरंतर अनेक जोखीम उठाया है । और साथ ही, संघर्ष भी किया है । स्वातंत्र्योतर कालीन भारत के समाज में जिस सजगता, प्रामाणिकता और इमानदारी के साथ मानवीय मूल्यों और सामाजिक यथार्थ का निरुपण अपने लेख में किया है वह उनकी विशेष उपलब्धी है । अपने 'तमस' उपन्यास के माध्यम से भारत विभाजन परिणाम स्वरुप देश में होनेवाले भीषण सांप्रदायिक दंगों की निर्ममता की करुण गाथा को प्रस्तुत किया है । सांप्रदायिकता का 'तमस' किस प्रकार समाज को आच्छादित कर अंधेरे में धकेलता है कि व्यक्ति अपनी उखड़ी जिंदगी को मुक दर्शक की भाँती देखता है । अपितु उनकी कहानी उपन्यास का कथ्य आम आदमी की

जीवंत कथा है । उनमें वे अधिक सफल रहे हैं । उनके कथा साहित्य के समाज दर्शन का विस्तृत मूल्यांकन करने के उदेश्य से हम इस विषय को शोध अध्ययन का विषय बना रहे हैं । यहाँ साहित्यिक शोधकार्य की पूर्वभूमिका रुप इस शोध विषय की संक्षिप्त रुपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही हूँ । शोधकार्य की संक्षिप्त रुपरेखा निम्नलिखित है ।

❖ **<u>विषय चयन और महत्त्व :</u>**

विषय चयन की समस्या मेरे लिए बहुत ही मुश्किल थी क्योंकि मैं कुछ नया कार्य करना चाहती थी । इसी दौरान मुझे भीष्म साहनी का 'तमस' उपन्यास याद आया और उस विषय में विशेष जानकारी लेते हुए मैंने अपने गुरुजी से चर्चा की । जिससे मैंने भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन पर कार्य करना सोचा । भीष्म साहनी प्रेमचंदजी की परंपरा के यथार्थवादी लेखक है । साहनी ने अपने लेखन में आम आदमी की प्रतिष्ठा की स्थापना कर उनकी भीषण त्रासदियों और कुरुपताओं का बहुत सहज, स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है । उनकी द्रष्टि में बिना संघर्ष से सामाजिक जीवन में कुछेक परिवर्तन असंभव है । यह संघर्षशील बातें ही लेखक के लेखन की शक्ति है । उनके कथा साहित्य का प्रमुख आधार समाज और देश में होनेवाली गतिविधियाँ है उन्होंने जैसा लोगों को देखा, सोचा और समझा वैसा ही लिखा है । उनकी सभी रचना प्रक्रिया स्वत: अनुभूति का फल है । अपने सभी उपन्यास और कहानी में भीष्म साहनी ने तमाम सामाजिक – आर्थिक पहलूओं का चित्रण किया है । साथ ही साथ भीष्म साहनी हिन्दी के उन गिनेचुने साहित्यकारों में हैं जो साहित्य व फिल्म दोनों क्षेत्र में अपनी मौलिक पहचान बनाने में सफल रहे हैं । उनके व्यक्तित्व की विभिन्न प्रतिमाओं ने मूझे उन पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया ।

इस शोधकार्य के मार्गदर्शक माननीय डॉ. बी. के. कलासवा साहब की मैं अंत:करणपूर्वक आभारी हूँ और ऋणी रहूँगी ।

❖ सामग्री संकलन के सूत्र :

शोधकार्य करना तथा तत्–संबंधी सामग्री संकलन करना एक अति श्रमसाध्य कार्य है । क्योंकि विश्वसनीय सामग्री के द्वारा ही शोधकार्य प्रामाणिक, ठोस एवं वैज्ञानिक हो पाता है । इस शोध प्रबन्ध के लिए निम्नांकित सामग्री के स्त्रोत रहेंगे ।

- भीष्म साहनी के कथा साहित्य को प्राप्त करना ।
- प्रकाशित साहित्य और समीक्षा–ग्रंथ प्राप्त करना ।
- पूर्व प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध ग्रंथों को प्राप्त करना ।
- पत्र–पत्रिकाएँ प्राप्त करना ।
- शब्दकोश तथा साहित्यकोश प्राप्त करना ।
- वेबसाईट, इत्यादि ।

विभिन्न प्रकाशकों से पत्रव्यवहार एवं दूरभाष से संपर्क करके शोध सामग्री का संकलन करना । विद्वानों से पत्र–व्यवहार, दूरभाष एवं साक्षात्कार द्वारा संकलन करने का प्रयास किया है।

❖ शोधकार्य का उद्देश्य :

प्रत्येक कार्य के पीछे कोई उद्देश्य होता है । शोध जैसा कठिन कार्य भी बिना उद्देश्य के नहीं हो सकता । मेरे इस शोध कार्य के पीछे भी महत्वपूर्ण उद्देश्य छिपा है जो इस प्रकार है ।

- इस शोध प्रबन्ध में भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन को विस्तृत रुपसे प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास रहा है।
- भीष्म साहनी के कथा साहित्य में 'समाज दर्शन' इस विषय पर मेरी जानकारी के अनुसार अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है । अत: यह नया व मौलिक विषय हैा ।
- भीष्म साहनी यथार्थवादी लेखक है । जिन पर सवाँगीण अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है।

❖ **पूर्ववर्ती शोधकार्य :**

भीष्म साहनी पर जो पूर्ववर्ती शोध कार्य हुए है, उनकी जानकारी सामग्री संकलन करने से प्राप्त हुई है । मेरी जानकारी के अनुसार अब तक भीष्म साहनी पर निम्नलिखित शोध प्रबन्ध प्रकाशित हुए है ।

(१) भीष्म साहनी के उपन्यास नये मूल्यों की तलाश, डॉ. मीनाक्षी शर्मा

(२) कहानीकार भीष्म साहनी – डॉ. रीना पटेल

(३) कथाकार भीष्म साहनी – डॉ. कृष्णा पटेल

(४) तमस एक अध्ययन – डॉ. अर्चना जैन

(५) नाटककार भीष्म साहनी – डॉ. सुरैया शेख

(६) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध – डॉ. संजय गडपायले

(७) तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी – प्रा. दिलीप फौलाने

(८) डॉ. सुरेश बाबर, भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन

(९) डॉ. प्रमिला अग्रवाल, भारत विभाजन और हिन्दी कथा साहित्य

(१०) रमाकांत श्रीवास्तव, भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना

❖ **शोधकार्य की विशेषताएँ :**

इस शोध कार्य की निम्नलिखित विशेषताएँ होगी । यथा –

- इस शोध प्रबन्ध को अध्ययन की सुविधा के लिए विभिन्न अध्यायों में विभक्त किया गय। हैा ।
- इस शोध प्रबन्ध के द्वारा भीष्म साहनी का संपूर्ण जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया है।
- इस शोध प्रबन्ध में भीष्म साहनी के सभी कथा साहित्य का मूल्यांकन करते हुए उनमें चित्रित समाजदर्शन को स्पष्ट किया गया है।
- समाज दर्शन के माध्यम से भीष्म साहनी के कथा साहित्य की प्रवर्तमान युग में सार्थकता सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

❖ **शोधकार्य की परिसीमा :**

शोध–परक अध्ययन करते समय विषय की सीमा तक पहुँचने की प्रक्रिया में शोधार्थी विषयांतर से तो बच सके, इस हेतु से शोध प्रबंध के विषय की सीमा निश्चित कर लेना शोधार्थी के लिए आवश्यक है । एक निश्चित परिक्षेत्र में कार्य करके वह प्रतिपाद्य तक पहुँच सके, इसलिए भी सीमा निर्माण अति आवश्यक है ।

प्रस्तुत शोध निबंध में भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है । फिर भी साहित्य विशाल फलक पर है, जिसमें न जाने कितने द्रष्टिकोण है । मैंने कुछ एक द्रष्टिकोण को छुने का प्रयास मात्र किया है तो उसमें मेरी किसी जगह अल्पज्ञाता तो होगी । वैसे इस दिशा में अलग विचार प्रस्तुत है । इस शोधकार्य में कुछ अधूरी बातें परवर्ती शोधार्थी पूर्ण करेंगे क्योंकि कोई भी इन्सान संपूर्ण नहीं है जिसका हमे स्वीकार करना रहा ।

❖ **शोध प्रबन्ध का परिचय :**

➢ **प्रबन्ध शीर्षक :**

भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है ।

(१) **प्रथम अध्याय :**

➢ **साहित्य में समाज दर्शन की परिभाषा और स्वरुप :**

साहित्य को समाज का आईना कहा गया है । जिस प्रकार मनुष्य अपना चेहरा आईने में देखता है, और उसके चेहरे पर कहाँ दाग हैं, यह जानकर वह उसे दूर करने की कोशिश करता है, उसी प्रकार समाज अपना यथार्थ प्रतिबिम्ब 'साहित्य' के आईने में देख सकता है । वास्तव में जैसा समाज होगा वैसा ही साहित्य भी रचा जाएगा । समाज में प्रवर्तमान अच्छाई–बुराई, नीति–अनीति, गुण–दुर्गुण, न्याय–अन्याय – इन सभी तत्व को मानव समाज के सामने रखता है, और मनुष्य–समाज में व्याप्त बुराइयों को दुर करने का प्रयत्न करता है । इस प्रकार साहित्य समाज में खलबली मचा देता है ।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील लेखक भीष्म साहनी अपने लेख 'साहित्य मनुष्यों को मनुष्य से जोड्ता है' में साहित्य के महत्व को इस प्रकार प्रतिपादित करते हैं – 'साहित्य के बारे में यह तो सच है कि वह जीवन का दर्पण होता है, उसका प्रतिबिंबन करता है, परिस्थिति विशेष की विड्म्बनाओं का, उसके त्रासद और हास्यास्पद दोनों पक्षों का उद्घाटन करता है, लेकिन साहित्य में बहुत–सी सीमाओं का अतिक्रमण कर जाने का गुण भी होता है जिसकी सबसे बडी खासियत यह है कि साहित्य लोगों पर धर्मनिरपेक्ष बनानेवाला प्रभाव डाल सकता है । उनका लोगों पर एक शिक्षाप्रद और उन्नयनकारी प्रभाव पड्ता है । वह हमारी संवेदनाओं का परिष्कार तो करता ही है, हमें जीवनी को अधिक वस्तुपरक ढंग से, अधिक असंलग्न ढंग से, और अस्तित्व के एक उच्चतर धरातल से देखने में सक्षम भी बनाता है । इस धरातल से जीवन हमें एक परिप्रेक्ष्य में दिखाई देने लगता है और यह परिप्रेक्ष्य सामंजस्य तथा सहयोग की भावना से परिपूर्ण जीवनी के लक्ष्य की तुलना में बेकार के झगड़ों–टंटों, चालबाजियों, संकुचित साम्प्रदायिक दलबंधियों, रुढिवादिता और कट्टरता आदि को तुच्छ कर दिखाता है ।'

साहित्य और समाज एक दूसरे को प्रभावित करते रहते है । दोनों में आदान–प्रदान की प्रक्रिया चलती रहती है इससे सामाजिक– उन्नती की आधारशीला मजबूत बनती है । संसार में आज तक जो विप्लव हुए क्रांति हुई एवं परिवर्तन हुआ उसके मूल में कोई न कोई साहित्यिक विचारधारा सक्रिय रही है ।

प्रथम अध्याय में 'समाज दर्शन' की परिभाषा एवं स्वरुप को स्पष्ट करते हुए साहित्य में समाज दर्शन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

(२) द्वितीय अध्याय :

➢ भीष्म साहनी – व्यक्तित्व और कृतित्व :

द्वितीय अध्याय में साहित्यकार भीष्म साहनी की सामान्य जीवन रेखा प्रस्तुत करते हुए उनकी शिक्षा, उनका पारिवारिक जीवन, उनका संघर्षशील व्यक्तित्व एवं एक साहित्यकार के रुप में उनकी सफलता एवं सम्मान इत्यादि का विस्तृत वर्णन किया ।

भीष्म साहनी एक यथार्थवादी लेखक – कहानीकार थे । भीष्मजी के मीजाज में एक खुबी यह थी कि उनमें जल्दबाजी नहीं थी, सोचकर थोडा बोलते थे । कहानी के कथा वस्तुका चुनाव भी वह बडे धीरज से करते थे, साधारण लोगों के जीवन की छोटी–छोटी बातें, वह खुद अपनी आँखों से देखते थे । उन लोगों की सामाजिक और व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करते थे । इनकी रचनाओं में कहीं भी अस्वाभाविकता नहीं आ पाती थी । उनकी रचनाओं में उनका व्यक्तित्व स्पष्टत: झलकता था । भीष्मजी की तरह रचनाकार होना बहुत कठिन है, वर्षो तक चुपचाप और लगातार परिश्रम करते रहने से ही उनका ऐसा प्रखर रचना व्यक्तित्व उभर कर आया था । साहित्य की समस्त विद्यायें उनके व्यक्तित्व में धूल मिलकर सृजनात्मक्ता की ऐसी उत्कृष्टता प्रस्तुत करती थी कि उनकी कृतियाँ अपने समय का जीवन दस्तावेज बन जाती थी । वह अपने भोगे हुए को ही कहानी का भाग बनाते थे । अपनी अनुभूतियों को कहानी में बाँटते थे । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की संपूर्ण जानकारी इस अध्याय में प्रस्तुत की गयी है। साथ ही, उनके जीवन के बारे में गहन विचार–मंथन प्रस्तुत किये गये।

(३) तृतीय अध्याय :

➢ हिन्दी कथा साहित्य और भीष्म साहनी :

भीष्म साहनी अपने समाज के प्रति सजग रचनाकार के रुप में सामने आते थे । उन्होंने अपने लेखकीय दायित्व को निभाते हुए समाज के बीच होनेवाले मूल्य विघटन और मूल्य परिवर्तन को सही रुप में पकडने की कोशीश की थी । साहनीजी के साहित्य का केन्द्र बिंदु मध्यवर्ग था, मध्यवर्ग का ही पक्ष लेकर साहनीजी ने सामंतवाद और पूँजीवाद की शोषणमूलक प्रवृतिओं की कलई खोलकर खरीदी थी । उन्होंने अपने साहित्य में यथार्थ का ऐसा रचनात्मक चित्रण किया था कि जिसे पढकर पाठक तिलमिला जाता था, और पूँजीवाद को बल देनेवाली प्रवृतियों के प्रति आक्रोश से भर उठता था, उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट होता था कि मध्य वर्ग और निम्न वर्ग पूँजीवाद और सामन्तवाद के शोषण का किस सीमा तक शिकार हुए थे । साहनीजी की सूक्ष्म और पैनी दृष्टि वहाँ तक पहुँची थी जहाँ सामाजिक दूषणों की जडें फैली थी ।

समाज में व्याप्त किसी भी अनाचार को वे अपने व्यंग्य बाणों का निशाना बनाने से नहीं चुकते थे । साहनीजी की प्रत्येक कहानी में आशावादी दृष्टि परिलक्षित होती थी परिणाम स्वरुप पाठक के हताश जीवन में आशा कि एक नूतन किरण संचरित हो उठती थी । वस्तुत: उनका साहित्य क्रांतिकारी भावनाओं को बल देनेवाला अवश्य था किन्तु उनकी क्रांति ध्वंसात्मक प्रवृतिओं का पक्ष नहीं लेती थी ।

भीष्म साहनी ने सत्य को यथार्थवादी दृष्टि से अभिव्यक्त करते हुए मानवता और नये मानवतावादी मूल्यों की खोज की थी । उनके कथा साहित्य में तत्कालीन समाज के प्रतिबिम्ब नजर आते हैं। इस अध्याय में भीष्म साहनी के कथा साहित्य में भीष्म साहनी का स्थान प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

(४) चतुर्थ अध्याय :

➢ भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन :

भीष्म साहनी अपने समाज के प्रति सजग रचनाकार के रुप में सामने आते हैं । उन्होंने अपने लेखकीय दायित्व को निभाते हुए समाज के बीच होनेवाले मूल्य विघटन और मूल्य परिवर्तन को सही रुप में पकड्ने की कोशीश की है। उनके कथा साहित्य में नई पीढी और पुरानी पीढी के बीच का संघर्ष, पारिवारिक विघटन, सांप्रदायिक दंगें जैसी कई सामाजिक समस्याओं को दृष्टिगोचर किया है ।

भीष्म साहनी ने सत्य को यथार्थवादी दृष्टि से अभिव्यक्त करते हुए मानवता और नये मानवतावादी मूल्यों की खोज भी की है । उनके कथा साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना के कारण उनके कथा साहित्य में तत्कालीन समाज का प्रतिबिंब नजर आता है । भारतीय समाज के ऐतिहासिक परिदृश्य को भीष्म साहनी अपनी कहानीओं से कभी ओझल नहीं होने देते थे । स्वाधीन आंदोलन, स्वतंत्रता की प्राप्ति, सांप्रदायिक दंगे, विदेशी आक्रमण, पूँजीवादी शीकंजा, गड्बडाते जीवन मूल्य, वर्गधृणा का फैलाव, अफसरशाही, दोगली राजनीति, सस्ती नेतागीरी हमारे इतिहास के हिस्से है । इन तमाम त्रासदियों के अन्तरसूत्रों की पहचान सही लेखन की शर्त

है और भीष्म साहनी का लेखन उसे पूरा करता है । स्वतंत्रता के उपरांत राजनीतिक क्षेत्र में एक प्रकार की इमानदारी का अभाव, नैतिकता का त्याग और सार्थ की भावना दिखाई पडी । स्वाधीनता आंदोलन के समय देश के राष्ट्रीय जीवन में जिस सदाचार और उच्चता की लहर दौड रही थी वह क्रमश: लुप्त हो रही थी । एक और जनता पीछे ही जा रही है तो दूसरी और नेता और सरकारी अफसरों में अधिक सुविधाएँ और बहेतर जिन्दगी को आसानी से प्राप्त करने के अवसर मिल जाने के कारण त्याग, संयम, देशरहित, सामाजिकता की भावना नहीं के बराबर रही गयी थी । दूसरी और धर्म सम्बन्धी विशंगतियों और अंत: विरोधों का चित्रण किया है । समाज में धर्म के नाम पर पनप रहे अनाचार, अत्याचार, शोषण और बाह्याचार को सशक्त रुप में प्रस्तुत किया है । प्रवर्तमान युग में भारत में धर्म के नाम पर सांप्रदायिक दंगें हो रहे है ऐसी सुलगती हुई समस्या को भीष्म साहनीने अपनी कलम से वाचा दी है । समाज में धर्म के नाम पर और राजनीति की फैली हुई समस्याओं की और संकेत करते हुए भीष्म साहनी के कथा साहित्य में निरुपित समाज दर्शन को उजागर करने का प्रयास किया है।

(५) पंचम अध्याय :

➢ भीष्म साहनी के कथा साहित्य में शिल्प विधान :

भीष्म साहनी के कथा साहित्य में सूक्ष्म और संलिष्ट स्थितियों को भी वह इस रुप में प्रस्तुत करते हैं कि उनमें बौद्धिकता का आरोप नहि होने पाता भाषा और शिल्प के स्तर पर साहनी में कहीं कोई आग्रह नहिं दिखाई देता । उनकी भाषा अत्यंत सुलझी हुई है । उन्होंने अपनी कहानियों में जो विषय उठाये हैं उन्हीं के अनुरुप भाषा का प्रयोग भी किया है । उन्होंने अपनी कहानियों में पात्रो से उनकी अपनी ही भाषा बुलवाई है, फिर चाहे वह पात्र पंजाबी हो, बिहारी हो या फिर अंग्रेजीयाँ । अंग्रेजी भाषा–साहित्य में वर्षो तक अध्यापक रहे तो अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त स्वाभाविक रुपेण हुआ है । वे पंजाब के निवासी थे तो अनेकत्र पंजाब की आँचलिक शब्दावली का प्रयोग हुआ था । हिन्दी में वे लिखते थे और आश्चर्य की बात तो यह है कि उनकी एक कहानी में भोजपुरी भाषा के भी सहज सुन्दर प्रयोग मिलते थे । वह उर्दू भाषा के

भी अच्छे विद्वान थे । साहनी जी की भाषा की एक खूबी यह भी थी कि वह व्यंग्य के अनुकूल थे। साहनी जी के कथा साहित्य में तत्सम् शब्दों का बाहुल्य था । साहनीजी विभिन्न कहानियों से उनकी वर्णन–कला के साथ साथ उनकी भाषागत प्रौढता, शिल्पगत प्रतिभा लक्षित होती थी ।

निष्कर्षत: यह स्वयं स्पष्ट है कि भीष्म साहनी की कहानियों का शिल्प परंपरागत होते हुए भी पुराना नहीं कहा जा सकता । उसमें जीवन की वर्तमान विसंगतीयों एवं विदृपताओं की यथार्थ और पैनी अभिव्यक्ति थी । उनके शिल्प विधान की एक मात्र और प्रमुख विशेषता उनकी अनुभूति की सच्चाई ।

साहनी जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को हमारे सामने लाये है । उनकी भाषा शैली सरल, सहज एवं रोचक थी । इस अध्याय में साहनी जी के कथा साहित्य में अभिव्यक्ति शिल्प विधान को वर्णित किया।

❖ उपसंहार :

अन्त में इस शोधकार्य का 'उपसंहार' प्रस्तुत किया इसके अन्तर्गत आवश्यक मुदों का जैसे हिन्दी कथा साहित्य और भीष्म साहनी, भीष्म साहनी का कथा साहित्य में समाज दर्शन, भीष्म साहनी का कथा साहित्य में शिल्प विधान का मूल्यांकन करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया ।

भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन की अभिव्यक्ति पूर्ण यथार्थ के साथ हुई है । ये कथा साहित्य नये संदर्भो की तलाश वैयक्तिक जीवन के आधार पर करने में सफल हुए थे । पारिवारिक समस्याओं एवं सांप्रदायिक समस्याओं को भीष्म साहनी ने विविध द्रष्टिकोण से प्रस्तुत किया है । भारत विभाजन की स्थिति पर लिखे गये उनके उपन्यास की संवेदनात्मक दृष्टि को तो स्पष्ट करती ही है, साथ ही विभाजन के पश्चात् टूटते हुए मानवीय मूल्यों की कहानी भी कही जाती है । टूटते–बनते मूल्य नारी जीवन की समस्याएँ तथा जातीवाद की समस्याओं को साहनीजी ने यथार्थ अभिव्यक्ति दी है ।

भीष्म साहनी भारतीय संस्कृति एवं विराट मानवतावादी दृष्टि से अनुप्राणित थे । उनके इस दृष्टिकोण को इस शोध प्रबन्ध में समाज दर्शन के रुप में उभारने का यथासंभव प्रयास किया जायेगा अत: एवं साहित्य के तथा भीष्म साहनी के अध्येताओं को यह तैयार होनेवाला शोध–प्रबन्ध उपयोगी होगा यह मेरा विश्वास है । हो सकता है, भीष्म साहनी के उपन्यास–कहानी में वर्णित समाज दर्शन को निरुपित करने का यह प्रथम प्रयास है।

❖ **कृतज्ञताज्ञापन :**

प्रस्तुत शोध प्रबंध 'भीष्म साहनी के कथा साहित्य में समाज दर्शन' सम्पन्न करने में जिन विद्वानों, साहित्यकारों, शोधार्थी एवं आत्मीयजनों ने सहायता प्रदान की है उन सबको स्नेहपूर्ण भावना से अतीव कृतज्ञ हूँ । जिनके प्रति आभार प्रकट करना में अपना प्रथम कर्तव्य मानती हूँ । शोधकार्य चढ़ाव का सामना करना पहता है पर मेरे अभिभावकों के सहयोग और आशिर्वाद से मैंने इस कार्य को पूर्ण किया ।

प्रथम शोधार्थी डॉ. बी. के. कलासवा साहब की ऋणी हूँ जिनके मार्गदर्शन के बिना शोधकार्य की सफलता संभव ही नहीं थी । साथ ही डॉ. शैलेष मेहता और डॉ. एन.टी.गामीत जिनका शोधार्थी को सदैव मार्गदर्शन मिलता रहा जिनका शोधार्थी आभार व्यक्त करती है।

मेरे इस शोधकार्य की प्रेरणामूर्तिरूप मेरी माताश्री तथा मेरे भाई–बहन जिन्होने सदैव प्रोत्साहन एवं प्रेरणा प्रदान की। मेरे पति जिन्होने मुजे सही रास्ता सुजाया, वरन हाथ थाम कर सदैव मेरे साथ चलते ही रहे उनके प्रति मैं हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ । इस कार्य में मेरे परिवार का सहयोग और शुभकामनाओं ने मेरा कार्य आसान कर दिया । मेरे श्वसुर श्री का आशीर्वाद, एवं मेरी सास ने मुझे मेरे इस कार्य के लिए सदैव हौसला बढ़ाया ।

अपनी कॉलेज के सभी ट्रस्टीगणश्री, प्राचार्यश्री, मेरी कॉलेज के सभी अध्यापक मित्र, सहकार्यकर, ग्रंथपाल, एवं मेरे प्रिय छात्रों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ । जिनके प्रोत्साहन ने मुझे निरंतर आगे बढ़ाया ।

इस कार्य की पूर्णता के लिए जिन सुधीजनों, गुरुजनों, मित्रों, शुभचिंतको एवं स्नेहीजनों ने मेरी सहायता की है, आशीर्वाद दिये हैं, प्रेरित किया हैं, शुभकामनाएँ दी है । उन सभी नामी–अनामी व्यक्तियों के प्रति मैं सहृदय कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

अंत में शोध प्रबन्ध को मनभावना रूप प्रदान करनेवाले विलनेट कोम्प्युटर–जूनागढ़ के मनिषभाई चुडासमा एवं जयेशभाई चुडासमा के प्रति में कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

धन्यवाद

दिनांक : विनीत

स्थल : राजकोट मारु मितल बी.